

यो यो नं यं उ स म के लुं वी नी बा नं के पुं व बा वं न यो यि यो नं मां लि या
नं नं न सॉ लि क सं नं नं दि बा ल र यो नं यी यो यि यो नं पुं न ग नं नं व व
नं नं पुं द्या पुं द्य न मू नि या यि यो नं नी ल स ह नं गं स द्यो व यी यो नं न
ि क स यो वं न यं ग मां नि यो ॥

॥ वा य ना ल सि ॥ ना ल द नं य

... ननु क्व वाययः पुन्यक वृत्तमन्त्राणि गगन रुद्र यक्र वयि याश्च क्व वा
ह्रस्वाणि गगन सन्धव क्रव यि याश्च क्व कि सवित्र विथय वक्र दिक् दिक्
कि हि मृषणा न न मृ नुरुक्त सर्व दवक्र सा दथ दिगः मृ दिवयन
संसा वः कि हवन पुन्य उक्ता य ह वा सा व कि हवन पुन्य उक्ता विन

कि नि हवन न व ना ण व ए सा वित रु वि ग सा उक्ता सा मृ दि
नि श्री स क यु व वा उगा गाः का दि गा व सा व मृ सा व १ उ वा न व न रु
य व न मा व य ह य मा यु ग ग ग सं सा व ॥ ॥ वा ग रु व यि ॥ वा न
मान ॥ ॥ क व ठा र्च न वि दि प र क प र वा पु क या मि क द व

गनाद वावधि ॥ एदाव नृणां गि. क. व. वः ॥ तम ब्रूय १४ धनि सुम
गना ॥ ॐ वक्रा मृका दक म १५ कि नि स म रा व नु रा व क मृद
य वृ पं १ ग ध्य स स व रि थी ल म्कि म द्वा का व ॐ सृ प कि लि नः
व कृ सा द्वा ॥ क न क रू प म नि य क न वि ठ य ठ् ॥ प १५ प १५ व उप

१
 अहिना २५ अमृताप २५ वनप २५ उषधिप २५ विहिनिथ
 ५५ १ वाजा २५ कृत्तु २५ दूर्वा २५ १५ लसदिनाः श्री वक्राचार्य मन्त्र्या
 २५ १५ अकिनी वा माख १५ वादाव पिनिः यिव यिव २५ व संज्ञका २५
 २५ २५ २५ १५ २५ २५ अर्यन २५ अहिमन २५ सखरु २५ सदा २५ २५ २५

वाह्याय॥ ॥ अग्निः अग्निमिया निलं क त द। षः सः दृक स
न विवेया कि न दृ दय वि ताय ना वयि॥ ॥ उव उ या गि नि
दृ दय स वा २ व रु वा वा हि अलिं ग स का यी व ना वयि॥ ॥ उ र्थ स
वा द। क व १ क वा व २ क य अलिं ग स नी व व र्हि वा वि व ना व॥ ॥

॥ ५ ॥

उत्थं द्रुं रयादाथी सम्य व वाह गायकः रुद्रिय उगक निवा सिया वः
॥ ॥ धनशालि काकाय ॥ ॥ शालि का तु ल मा ना क व क न रु
ग वः र व व र्णा स प म ॥ वा र् का वि ला णाः वि र व न म ना रु वा ला
दु ना क न्द वि का ॥ श न न्द व क मा नाः नि र्प र्म स ग कः ला ग वि का गः

॥ ५ ॥

संग ॥ श या व व क मा नाः कि न गु धा नि व यं पा तु व ४ सिद्धि स म्भ व
४३ ॥ ॥ स र्व का थ ग का ला नः स र्व का थ ग का व यः स र्व ध र्मा ग नि
वा ला ४ द ठा म ४ ल मूर् क म ॥ ला न ध र्मा ग स र्व कं ला न य र्था वि सा धः
कः स म न रु ड का या ग रा था म ४ ल मूर् क म ॥ स र्व व क म स प र्मः स र्व

यत्क तद्विवर्त्तिनं ॥ समन्त रुद्र विष्णोर्गन्तानाम १३ लम्बु रुम् ॥ सर्व स
 नमस्तस्मै ॥ शुद्धयस्तु किं निर्मला समन्त रुद्र वायाग द्यायम १३ ल
 सा ॥ १४ ॥ ॥ वागकाय ॥ दानपुत्रिकाय ॥ शुद्धयस्तु किं निर्मला
 समन्त रुद्र विष्णोर्गन्तानाम १३ लम्बु रुम् ॥ ॥ वागकाय ॥ दानपुत्रिकाय ॥ शुद्धयस्तु किं निर्मला

॥ याग काय ॥ दान ए कि काय ॥ गुरु ण स वि यः शु किः ॥
ग य स क वि दि क र ॥ ॥ याग का त यि ॥ का त न्न न मा थ ॥ ॥

सिद्धि नमः शिवाय नमः पूर जयविद्य नमः शिवाय नमः

[illegible]